International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 01 Issue 1 || December 2012 || PP 100-102

रूद्रदामन की धार्मिकता

डा. लता व्यास
व्याख्याता
चौधरी बल्लू राम गोदारा राजकीय कन्या महाविद्यालय श्री गंगानगर

इतिहास में यह महाक्षत्रप रूद्रदामन प्रथम के नाम से प्रख्यात है। साहित्य में इसका नाम अनेक बार आया है। आन्धौ अभिलेख से प्रकट होता है कि उसने चष्टन के साथ शासन किया था।[1] इस अभिलेख में चष्टन और रूद्रदामन दोनों के साथ राजा की उपाधि का प्रयोग समान रूप से हुआ है इससे अनुमान किया जा सकता है कि उस समय भी रूद्रदामन चष्टन की आधीनता में शासन कर रहा था

रूद्रदामन वैदिक धर्म का मानने वाला था वह पूर्णतयः भारतीय संस्कृति को अपना चुका था। उसने खुशी के अवसर पर सहस्त्रों गायों का दान ब्राह्मणों को किया था जिससे उसकी धर्म वृद्धि हो सके।[2] वह वैदिक धर्म में आस्था रखने के साथ–साथ अन्य धर्मों के प्रति भी समता का व्यवहार करता था। उसके शासन समय में जैन धर्म भी सौराष्ट्र में अपना स्थान बना चुका था जो उसकी धार्मिक जूनागढ़ से जयदामन के पौत्र के समय का लेख मिला है। रूद्रदामन के दो पुत्र थे दामजद और रूद्र सिंह प्रस्तुत लेख के अत्यल्न भग्न होने के कारण यही नहीं बाताया जा सकता की यह किसका है, अंतिम पंक्ति मे केवल्य ज्ञान प्राप्त व्यक्ति का उल्लेख दिखता है उससे लगता है कि जैन धर्म से सम्बन्धित किसी धर्मदाय को दर्ज करना इस लेख का उद्देश्य रहा होगा।

गुजरात तथा सौराष्ट्र में धंक नामक स्थान पर कतिपय जैन गुफाएँ है जिनमें से कुछ में जैन तीर्थांकरों की मूर्तियां है यह गुफाएँ ई0 स0 के प्रारम्भ की प्रतीत होती हैं।

महाभारत का उल्लेख है कि शकद्वीप में शंकर की पूजा हेती थी रूद्रदामन, रूद्रसिंह, और रूद्रसेन के नाम कदाचित शैव प्रतिष्ठा के उदाहरण है। कुछ विद्वानों का मत है कि शक मुद्राओं पर शिव और पार्वती के चित्र मिलते हैं।[1] रूद्रदामन और महाराष्ट्र के शक कुलों में जैन धर्म वैदिक धर्म आदि के साथ समानता का व्यवहार किया क्योंकि इन दोनों धर्मों की पर्याप्त चर्चा मिलती है। यह शक कुल की धार्मिक सहिष्णुता को ही सिद्ध करता है।

मथुरा के शक कुल की धार्मिक नीति–

यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि मथुरा में शक कब और कैसे पहुँचे ? स्टेनकोनो का मत है कि जिस समय विक्रमादित्य ने मालवा में अपना स्वतन्त्र राज्य स्थापित किया। उस समय शकों को वहाँ से भागना पड़ा तब वे मथुरा पहुँचे और वहाँ अपना नवीन राज्य स्थापित किया। टार्न का भी विश्वास है कि मथुरा के शक मालवा से ही वहाँ पहुँचे थे। हगान और हगामस सम्भवतः मथुरा के प्रथम क्षत्रप थे इनके पश्चात कदाचित राजबुल मथुरा का शासक हुआ।

शोडास

मथुरा सिंह शीर्ष से पता चलता है कि राजबुल के पश्चात शोडास मथुरा का शासक हुआ था लेख में 72 तिथि दी हुई है। इस लेख से यह स्पष्ट हो जाता है कि राजवुल की मृत्यु के पश्चात 72 तिथि तक शोडास महाक्षत्रप हो गया था।

प्रथम और दूसरी शताब्दियों में मथुरा में कृष्ण एवं वासुदेव की भक्ति का इतना अधिक प्रचार हुआ कि शक मंडलेश्वरों के आधीन उनकी अति सुन्दर मूर्तियाँ बनी। मोरा से प्राप्त पाँच वृष्णियों की मूर्तियो के अतिरिक्त उसी युग में संकर्षण की प्रथम प्रतिमा भी प्राप्त हुई है। जिसके सिर पर सर्प की छाया है यह मूर्ति अब मथुरा सग्राहलय में हैं। इससे शोडास के हिन्दु धर्म के प्रति आस्था का पता चलता है। महाक्षत्रप शोडास के समय के एक अभिलेख में भगवत वासुदेव के मंदिर के द्वार तथा वेदिकाओं के निर्माण का उल्लेख है।

उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले के कंकाली टीले से प्राप्त एक लेख शोडास के शासनकाल का है इसका प्रारम्भ भगवान महावीर की वन्दना से होता है। अतः यह धर्म से सम्बन्धित लेख है अतः इससे यह सिद्ध होता है कि उस समय मथुरा में जैन धर्म का खूब प्रसार था। उसमें किसी प्रकार का कोई प्रतिबन्ध नहीं था यह शोडास की धार्मिक सहिष्णुता को सिद्ध करता है। मथुरा के शक महाक्षत्रपों ने बौद्ध धर्म को भी प्रोत्साहन दिया था। रजबुल बौद्ध धर्म का अनुयायी था। उसकी पटरानी का एक लेख मथुरा से उपलब्ध हुआ है। महाक्षत्रप रजबुल की अग्रमहिषी युवराज खरओस्ट की बेटी की माँ अयसिअ अमुइज ने शाक्य मुनि बुद्ध का शरीर धातु प्रतिष्ठापित किया और स्तूप व संघाराम भी सर्वास्तवादियों के

चतुर्दिश संघ के परिगृह के लिए बनवाया था।[4] शकों ने सभी धर्मों को समान रूप से महत्व दिया और सभी धर्मो की निरन्तर विकाश यात्रा चलती रही शकों ने जहाँ एक ओर वैदिक हिन्दु धर्म को अपनाया वहीं दूसरी ओर बौद्ध एवं जैन को भी अपनाया शकों के

समय सभी धर्म बिना किसी भेदभाव के फलते–फूलते रहे, वह शकों की धार्मिक सहिष्णुता को सिद्ध करता है।

शकों के समकालीन पहलव वशं ने भी भारत में शासन किया। पह्लवों का इतिहास बड़ा विवाद ग्रस्त है न तो इनके राजाओं के विषय में अधिक कहा जा सकता है और न काल क्रम के विषय में इनका इतिहास शकों के साथ इतना घुल–मिल गया है कि कभी–2 यह निश्चित करना कठिन हो जाता है कि अमुख राजा शक है या पहलव।

पहलव

वोनोनीज इस वंश का प्रथम शासक था डी0सी0 सरकार का विचार है कि 58 ई0 पू0 में वह आरकोशिया, सीस्थान का स्वतन्त्र शासक हो गया था।

वोनोनीज के पश्चात् स्पैलिरिसिस सिंहासन पर बैठा डी0सी0 सरकार का विचार है कि वोनोनीज का उत्तराधिकारी उसका भाई स्पैलिरिसिस हुआ जो 18 ई0 पू0 पर सिंहासनासीन हुआ था।[1] ये दोनो शासक धार्मिक रूप से सहिष्णु थे ऐसा माना जा सकता है। क्योंकि इनकी कट्टरता की कोई कहानी नहीं है। इसके पश्चात् गोण्डोफर्निज शासक हुआ।

गोण्डोफर्निज –

गोण्डोफर्निज पहलव वशं का सबसे शक्तिशाली शासक था इसने कन्धार में ही आर्थेग्नीज के साथ शासन किया। गोण्डोफर्निज अपने पूर्वजों की भाँति श्रीमस, नीके, पल्लस आदि यूनानी देवताओं का पुजारी था क्योंकि इसके सिक्कों के पृष्ठभाग पर इन्हीं देवताओं का अंकन है।

गोण्डोफर्निज की देवव्रत उपाधि सर्वदा नवीन है। सम्भव है कि उसकी उपाधि के पीछे शिव उपासना का व्रत धारण करने का भाव निहित हो क्योंकि

उसकी कुछ मुद्राओं के पृष्ठ भाग पर त्रिशूल व तालपत्र धारण किये हुए स्थानक पुरुष का अंकन प्राप्त होता है जिसे कुछ मुद्राशास्त्रियों ने भारतीय देव शिव माना है।

गोण्डोफर्निज की धार्मिक सहिष्णुता का पता हमें उसकी मुद्राओं से चल जाता है क्योंकि वह विदेशी होते हुए भी भारतीय देव शिव को अपनी मुद्राओं में जगह देता है। यह उसकी सहिष्णुता को सिद्ध करता है ईसाई अनश्रुति के आधार पर स्टेनकोनो, कनिंघम आदि कुछ विद्वानों का मत है कि गोण्डोफार्निज के शासन –काल में ईसाई –धर्म के प्रचार के लिए सन्त टामस भारत आया था।

इसके विषय में बहुत पहिले से ईसाई जगत में यह किवदन्ती चली आ रही है कि उसके राज्य में ईसाई धर्म के प्रचार के लिए सन्त टॉमस भारत आये थे। इन कथाओं का तीसरी शताब्दी ई0 से प्रचलित एक रूप इस प्रकार है ''जब ईसा के शिष्य येरूसलम में ईसाई धर्म का प्रचार करने के लिए एकत्र हुए तो लाटरी डालकर इस बात का निर्णय किया कि किस देश में कौन सा व्यक्ति जाएगा। भारत में ईसाई धर्म के प्रचार का कार्य इस प्रकार टामस को मिला टामस भारत जाने को तैयार नहीं हुआ। तब स्वप्न में भगवान ने कहा मैं तुम्हारे साथ हूँ। इसी समय वहाँ धवन नामक एक भारतीय व्यापारी आया इसे राजा गुदनफर ने एक कुशल बढ़ाई लाने के लिए भेजा था। भगवान ने टामस को उसका आदेश मानने की प्रेरणा दी और उसे भारत भेज दिया। भारत में राजा ने व्यापारी और टामस को राजमहल बनाने के लिए बहुत सा धन दिया लेकिन उसने वह धन दीन दुखियों में बाट दिया। अब राजा को पता चला तो उसने दोनों को बन्दी बना लिया उसी समय राजा के भाई गैड की मृत्यु हो गयी देवदूत उसे स्वर्ग ले गये और वह महल दिखाया जिसे टामस ने सत्कर्मों से बनाया था। इसके बाद गैड को पुनरूज्जीवित कर दिया गया इस चमत्कार को देखकर दोनों भाई ईसाई बन गये इससे भी उनकी धार्मिक सहिष्णुता सिद्ध होती है। इसके पश्चात कुषाणों का शासन आया।

कुषाणों की धार्मिक नीति–

कुषाणों के प्रारम्भिक इतिहास के विषय में हमें चीनी ग्रन्थ पान–कु से अच्छी जानकारी मिलती है। प्रथम हनवंश के इतिहास से पता चलता है कि यू–ची जाति पाँच शाखाओं में विभक्त हो गयी उन्हीं में से एक कुई शुआँग भारत में कुषाण नाम से प्रसिद्ध हो गयी।

कुषाण शासकों के काल में धार्मिक विषयों में पूर्ण स्वतंत्रता थी। ब्राह्मण बौद्ध और जैन तीनों धर्मों के अनुयायी स्वतंत्रता थी। ब्राहम्ण बौद्ध और जैन तीनों धर्मों के अनुयायी स्वतंत्रतापूर्वक अपने धर्मों का प्रचार करते थे। कुषाण राजाओं ने अपने व्यक्तिगत धर्म को राज्य का धर्म बनाने का प्रयत्न नहीं किया।

कुषाण सिक्कों पर भी बहुसंख्यक देवी–देवताओं के चित्र खुदे हैं। जिससे पता चलता है। कि उस समय कितने धर्म फल फूल रहे थे। इन सिक्कों पर ब्राह्मण बौद्ध, पारसी, एलामी, सुमेरियाई, यूनानी, रोमन आदि देवता अंकित है।

फान–ए द्वारा लिखे गये परवर्ती हनवंश के इतिहास से पता चलता है कि इस विभाजन के 100 वर्षों बाद कुई शुआंग के सरदार क्यू–त्सियू–क्यो ने अन्य चारों को जीतकर एक शक्तिशाली राजतन्त्र के रूप में संगठित कर दिया तथा स्वंय राजा बन बैठा क्यू–त्सियू–क्यो का समीकरण कुजुल (कुसुलक) से किया जाता है जो कडफिसेस प्रथम की एक उपाधि थी। अतः कुषाण शाखा का प्रथम राजा कुजुल कडफिसेस अथवा कडफिसेस प्रथम ही था।

कुजुल कडफिसेस की धार्मिक नीति

यह कडफिसेस प्रथम के नाम से भी प्रसिद्ध है उसकी जानकारी के लिए पान–कू के ग्रन्थ हाऊ–हान–शू तथा उसके सिक्के महत्वपूर्ण है। साधारणतः कुजल

का शासन काल 12 ईसवीं से 65 ईसवीं के बीच माना जाता है उसकी मृत्यु 80 वर्ष की दीर्घ आयु में हुई थी।[1]

कुजुल कैडफिसेस की मुद्रायें आमू एवं वक्षु नदी की घाटी से होकर सिन्ध की उपत्यका तक प्राप्त होती है।

कुजुल फडफिसेस की ताम्र एवं रजत दोनो प्रकार की मुद्रायें प्राप्त होती है। राजा कुजल कुषाण के सिक्के काबुल एवं तक्षशिला से भी मिले हैं तक्षशिला से मिले एक सिक्के में उसकी एक उपाधि 'देवपुत्र' भी है जिससे यह सूचित होता है कि उसने भारत के सम्पर्क में आकर बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया था।

कुजल की कुछ मुद्राओं पर धर्म स्थित (ध्रमथिस) और सत्य धर्मस्थित (सच ध्रम–यिद) उपाधियाँ मिलती है ये सूचित करती हैं कि वह शैव अथवा बौद्ध धर्म को स्वीकार कर चुका था तथा उसमें पूरी निष्ठा रखता था। कुछ मुद्राशास्त्रियों ने उसके एक सिक्के की मूर्ति को भगवान बुद्ध बताया है। कुछ अन्य उसे शिव समझते है। मुख्य रूप से कुषाण शासक शैव धर्म की ओर आकर्षित रहे है।यह कुजल की धार्मिक सहिष्णुता का ही परिणाम है कि जहाँ एक ओर उसने अपनी मुद्राओं में यूनानी देवमण्डल के देवता हेराक्लीज, नीके, जीयस आदि का अंकन कराया वही हिन्दू शैव धर्म के प्रतीक चिन्ह वृषभ का अंकन एवं अस्पष्ट ही सही बुद्ध का भी अंकन कराया इससे उसकी धार्मिक सहिष्णुता सिद्ध हो जाती है।

संदर्भ सूचि

1. विमल चन्द्र पाण्डेय, पूर्वोक्त
2. विमलचन्द्र पाण्डेय, पूर्वोक्त
3. आर0सी0 मजूमदार, एज ऑफ इम्पीरियल यूनिटी
4. सत्यकेतु विद्यालंकार, पूर्वोक्त
5. राधा कुमुद मुखर्जी – भारत की संस्कृति एवं कला
6. ''राज्ञो चाष्टनस य्सामोतिक पुत्रस राज्ञो रूद्रदामन जगदाम–पुत्रक वर्षे द्विप च 1 से 50+2 फगुण– बहुलस द्वितिय वारे मदनेनं सीहिल– पुत्रेन (म) गिनिये जेष्टवीराये सी हि ल– धि त ओपशति – सगोत्राये लष्टि उथापित (रूद्वादामन का आंद्यौ लेख)
7. के0ए0 नीलकण्ठ शास्त्री एवं जी0 श्रीनिवासाचारी, एडवांश हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, प्रथम भाग
8. ओम प्रकाश, प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास (पंचम संस्करण)
9. राधा कुमुद मुखर्जी, पूर्वोक्त